अध्याय 4

रागों का शास्त्रीय वर्णन

राग बिंद्रावनी सारंग

परिचय :–

बिंद्रावनी अथवा वृन्दावनी सारंग राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। इस राग के आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इसके आरोह–अवरोह में गन्धार और धैवत स्वर वर्जित है, अतः इसकी जाति औड़व–औड़व हैं। वादी स्वर ऋषभ तथा सम्वादी स्वर पंचम हैं। इसका गायन समय–मध्यान्ह काल है।

दोहा :– **जब तिखो ही निखाद है, चढ़ते धैवत नाहीं।**
तब यह सारंग राग हि बिन्द्रावनी कहाई।

आरोह :– नि॒ सा, रे, म प, नि सां।

अवरोह :– सां नि॒ प, म रे, सा।

पकड़ :– नि॒ सा रे, मरे, प म रे, सा।

स्वर समूह :– (1) नि॒ सा रे म रे मप नि॒ प
(2) मप, नि सां नि॒ प म रे सा
(3) सा रे, मप, म रे, सा, नि॒ सा

राग बिहाग

परिचय :–

राग बिहाग बिलावल थाट से मानाजाता है आरोह में ऋषभ और धैवत वर्ज्य तथा अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग किया जाता है। इसलिये इसकी जाति औड़व–सम्पूर्ण है। वादी स्वर गन्धार और सम्वादी स्वर निषादं है। इस राग को रात्रि के प्रथम प्रहर में गाते बजाते हैं। राग की सुन्दरता बढ़ाने के लिये कभी कभी अवरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग पंचम के साथ विवादी स्वर की तरह किया जाता है। जैसे– पम गमग, रे सा।

दोहाः– कोमल मध्यम तीख सब चढते रिध को त्याग।
गनिवादी संवादितें जानत राग बिहाग'' –चन्द्रिकासर

आरोहः– नि॒ सा ग, म प, नि सां।

अवरोहः– सां,नि,ध प, म ग, रे सा

पकड़ः– नि॒ सा ग म प, म ग म ग, रे सा

स्वर समूहः– (1) नि़ सा ग, म प, प म ग म ग, रे सा।

(2) ग म प, ग म प नि, ध प, ग म ग।

(3) नि, ध प, म प, ग म ग, रे सा

राग मालकौंस

परिचय

राग मालकौस 'भैरवी' थाट से माना जाता है। इस राग के आरोह–अवरोह में ऋषभ और पंचम वर्जित होने से इसकी जाति औड़व–औड़व मानी जाती है।इस राग में गधनि कोमल लगते है। रागमालकौंस का गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर है। वादी स्वर – मध्यम तथा सम्वादी स्वर षड़ज है। इस राग की प्रकृति–गम्भीर है, और यह बहुत लोकप्रिय राग हैं।

दोहा :– कोमल सब पंचम रिखब दोऊ बरजित कीन्ह।
साम समबादिबादितें मालकंस को चीन्ह।।

आरोह :– नि़ सा, ग म, घ, नि सां।

अवरोह :– सांनिध, म, ग म ग सा।

पकड़ :– म ग, म ध निध, म, ग, सा।

स्वर समूह :–(1) सा़ ग, म, ध म, ध निध म।

(2) सां निध म, ग म ध म।

(3) धनि सां, गं सां निध म

राग खमाज

परिचय–

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। शेष स्वर शुद्ध है। इस राग के आरोह में ऋषभ वर्जित है और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते है इसलिये इसकी जाति षाड़व सम्पूर्ण है। वादी स्वर गन्धार और सम्वादि स्वर निषांद माना जाता है। गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

दोहा– चढ़त रिखब न लगाइये कोमल मनि विराज।
गनि वादी संवादितें कहियत राग खमाज।। –चन्द्रिकासार

आरोह :– सा, गम, प, घ नि सां।

अवरोह :– सां निघ प, मग, रे सा।

पकड़ :– नि ध, म प, ध, म ग,।

स्वर समूह :– (1) ग म प ध नि सां, नि ध प।

(2) नि ध प, म प ध मग, प म ग रे सा।

(3) नि़ सां नि ध प, म प ध म ग।

राग भूपाली

परिचय –

भूपाली राग कल्याण थाट से माना गया है। इसमें मध्यम और निषाद दोनो स्वर वर्ज्य है। इसलिये इसकी जाति औड़व–औड़व

मानते हैं। वादी स्वर गंधार है और संवादी स्वर धैवत हैं। इस राग के गाने का समय रात्रि का पहला प्रहर है। यह एक सरल व मधुर राग है।

दोहा :– आरोही अवरोही में सुर मनि किन्हे त्याग।
धग संवादीवादिते कहो भूपाली राग। चन्द्रिकासार

आरोह :– सा रे ग प, घ सां।

अवरोह :– सां, घ प, ग, रे, सा।

पकड़ :– ग, रे, सा ध़, सा रे ग, प ग, घ प ग, रे सा।

स्वर समूह :–(1) प़ घ़ सा, रे ग, प ग, घ प ग, रे सा।
(2) ग प, घ प, ग, रे ग, प ग रे सा।
(3) सा, घप ग, प ग रे ग, प ग, रे ग रे सा।

राग भैरवी

परिचय–

इस राग की उत्पत्ति भैरवी थाट से हुई है, राग भैरवी में रे, ग घ और नि स्वर कोमल लगते है। इस राग के आरोह तथा अवरोह में सातों स्वर लगते है, अतः इसकी जाति सम्पूर्ण–सम्पूर्ण है। वादी स्वर– मध्यम और सम्वादी षड़ज माना जाता है। गायन समय प्रातः काल है।

दोहा :– सब कोमल सुर भैरवी संपूरन सुर दोई।
मसवादी संवादी है सब जो चाहै कोई।। –चन्द्रिकासार

आरोह :– सा,रेगम,प, धनिसां।

अवरोह :–सां, निध प, म ग, रे सा,।

पकड़ :– म, ग सा, रे सा, घ नि सा।

स्वर समूह :– (1) सा, ध़, नि, सा रेगरे सा।
(2) निसा, ग, म प, ध़ प, निध, प ग म ग,रे सा
(3) सां, निध प, ग म प, ध़ प म प ग म गरेसा

मुख्य बिन्दु –

- राग बिहाग, बिंद्रावनी सारंग, भूपाली, खमाज क्रमशः बिलावल, काफी, कल्याण, खमाज थाट की रागे हैं।
- राग मालकौंस तथा भैरवी दोनों ही भैरवी थाट की रागे हैं।
- स्वर स्वरूप, पकड़ द्वारा ही राग के चलन का ज्ञान हो पाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. राग बिंद्रावनी सारंग की जाति क्या है?

   (अ) औडव–औडव (ब) औडव सम्पूर्ण

   (स) सम्पूर्ण–सम्पूर्ण (द) सम्पूर्ण षाढव

2. ग ध नि कोमल स्वर युक्त राग है–

   (अ) बिलावल (ब) भूपाली (स) मालकौंस (द) खमाज

3. किस राग में म नि स्वर वर्जित है–

   (अ) बिंद्रावनी सारंग (ब) भूपाली (स) भैरवी (द) बिहाग

उत्तरमाला– 1. (अ) 2. (स) 3. (ब)

लघुउत्तर प्रश्न–

1. पाठ्यक्रम की रागों की जाति लिखिए।
2. राग खमाज का परिचय लिखिए।
3. भूपाली व मालकौंस राग की प्रमुख स्वर संगति लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न–

1. पाठ्यक्रम की समस्त रागों के परिचय की संयुक्त तालिका बनाइये।

अभ्यास बिन्दु

पाठ्यक्रम की समस्त रागों की ऑडियो एवं वीडियो रिकॉर्डिंग का संग्रह कर दैनिक श्रवण करें।

Vocalist of Gwalior Gharana _Malini Rajurkar (Born-1941)